॥ श्री सद्गुरवेनमः ॥

श्री शिवस्तोत्र व श्री हनुमत्स्तोत्र आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता-ग्रन्थलेखक-प्रवक्ता-ज्योतिष-व्याकरण-तन्त्र-साहित्य-धर्मशास्त्र आदि के सुयोग्य विद्वान्-परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-प्रातःस्मरणीय श्री १०८ श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।

प्रकाशक का वक्तव्य

परमेश्वर की पराशक्ति स्वरूपा, अखिल लोककल्याणार्थ अनवरत करुणा की धारा प्रवाहित करनेवाली, विविधरूप धारिणी, श्रीदुर्गा, उपासक भक्त जनों की कामनाओं को पूर्ण करने वाली है।

जो अपनी प्रचण्ड शक्ति से दुर्दान्त दानवों का संहार करके भक्तजनों की सम्पूर्ण बाधाओं को हरने वाली है। जिसके काली, लक्ष्मी, सरस्वती, आदि अनेक नाम हैं। उसी महाशक्ति दुर्गा की बन्दना के संकल्प से यह स्तोत्र प्रकाशित किया गया है।

इस स्तोत्र के रचयिता गुरुवर श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री, माता श्री दुर्गादेवी के परमभक्त, एवं व्याकरण-ज्योतिष-साहित्य-धर्म-शास्त्र आदि के सुयोग्य विद्वान्-ग्राम सलेमपुर-पो० अछल्दा-जि० इटावा (उ० प्र०) के निवासी हैं।

जिनके भावों का प्रवल आवेग जब हृदय की सीमा में नहीं समा सका तो भावानुसारी शब्दों का सहारा लेकर कविता के रूप में फूट पड़ा। प्रस्तुत 'देवीस्तोत्र' पराम्बिका भगवती श्री दुर्गा की करुणामयी प्रेरणा का ही मूर्तमान्

स्वरूप है कि जिसमें उनके हृदय के पवित्रभाव भक्तजन कल्याणार्थ ही स्तोत्ररूप में प्रकट हुए हैं। भव्य भावों के सुरभितप्रसून शब्दसूत्र में ग्रथित होकर आराध्या श्री दुर्गा देवी के चरण कमलों का अभिषेक सा कर रहे हैं।

इसके श्लोक सरल, सुबोध तथा प्रवाहपूर्ण, विद्वान् से लेकर साधारणजन तक प्रिय होने से परमपूज्य गुरुदेवजी से प्रकाशनार्थ प्रार्थना की उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर श्री देवीस्तोत्र तथा श्री विन्ध्यवासिन्यष्टक प्रकाशनार्थ सरल हिन्दी भाषानुवाद करके मुझे दिया। उनके हृदय के भाव मूर्तिमान होकर स्तोत्र के रूप में आप के कर ककलों में समर्पित है इससे देवीभक्त कृपामयी भगवती दुर्गा व विन्ध्यवासिनी देवी की प्रार्थना देश-कल्याणार्थ व आत्मकल्याणार्थ अवश्य करें।

परमश्रद्धेयविद्वज्जनों से नम्र निवेदन है कि स्तोत्र में मानवस्वभाववश जो त्रुटियाँ रह गईं हों उनको कृपया सूचित करें ताकि अग्रिम संस्करण में सुधार हो सके।

कृपाकाङ्क्षी—
मूलचन्द्र गुप्त

॥ आदिशक्त्यैनमः ॥

हे! रक्तबीजतनुशोणितपानशौले !-
हे! शुम्भकैटभनिशुम्भविनाशलीले ।
हे! सर्गपालनविनाशनकर्मदक्षे ! -
हे! भद्रकालि ! भवतीं हृदि चिन्तयामि ॥

श्री देवीस्तोत्रम्

श्रीमान् परमादरणीय श्रद्धेय प्रातः स्मरणीय पूज्यपिता स्वर्गीय श्री लाला चुन्नीलाल जी गुप्त की परम पावन पुण्य स्मृति में यह पुस्तिका अनेकों बार प्रकाशित होकर निःशुल्क वितरण की जा रही है।

मूलचन्द्र
गुप्त

आदिशक्तयेनमः

अथ देवीस्तोत्रम्

श्लोक–१

ब्रह्मा त्वदीयकृपया विदधाति विश्व-
ञ्चापाति विष्णुरखिलं, प्रलयम्महेशः ।
सर्वे स्वकर्मनिरताः खलु वासवाद्या––
स्त्वामादिशक्तिमनिशं हृदि भावयामि ।।

अर्थः—

हे देवि ! ब्रह्मा आपकी कृपा से संसार की रचना, विष्णु पालन, एवं प्रणय काल में महेश्वर संहार करते हैं। आपकी कृपा से ही इंन्द्र आदि देवता अपने अपने कर्म में संलग्न रहते हैं। हे आदि शक्ति ! मैं निरन्तर हृदय में आपका चिन्तन करता हूँ। १ ।

× × ×

श्लोक–२

सञ्जायते प्रलयमेति च विश्वमेत-
त्वय्येव मातरिति वेदगिरो वदन्ति ।
त्वत्तः परन्न जगदम्ब बिलोकयामि
देवीन्दयार्द्रहृदयां सततं स्मरामि ।।

अर्थः—

हे जगदम्ब ! यह संसार आपसे उत्पन्न होता है, तथा आप में ही लीन हो जाता है। यही वेदवाक्य है, संसार में आपसे पृथक कुछ भी दृष्टिगोचर

नहीं हो रहा है। दया से द्रवित होने वाली माँ ! मैं आपका निरन्तर स्मरण करता हूँ।

× × ×

श्लोक–३

सच्चित्सुखम्परमनन्तमजं हि वेदा-
यद् ब्रह्मशुद्धमगुणं सततं वदन्ति ।
ब्रह्मादयोऽपि मुनयश्च विचिन्तयन्ति-
तद्धित्वमेव, भवतीम्मनसा स्मरामि ॥

अर्थः—

हे देवि ! जिसको वेद सत् चित् आनन्दस्वरूप परम अनन्त अज निर्गुण शुद्ध ब्रह्म कह कर निरन्तर पुकारते हैं। ब्रह्मादि देवगण तथा मुनिगण जिसका चिन्तन करते हैं, वह आप ही हैं। मैं आपका अपने मन में स्मरण करता करता हूँ। ३।

× × ×

श्लोक–४

त्वन्निर्गुणापि सगुणा निजभक्तहेतो–
र्भूत्वानिशम्प्रकुरुषे जगदम्ब ! शर्म ।
लोकं विलोकयसि देवि ! दयार्द्रदृष्ट्या––
त्वाञ्चिन्तयामि जगदीश्वरि ! विश्ववन्द्याम् ॥

अर्थः—

हे जगदीश्वरि: ! आप निर्गुण व निराकार होती हुये भी भक्तों के कल्याण के लिये साकार स्वरूप धारण करती हो, तथा सम्पूर्ण संसार को

करुणामयी दृष्टि से देखती हो, तुम संसार से पूजित हो, आपका मैं निरन्तर चिन्तन करता हूँ। ४।

× × ×

श्लोक–५

रज्जौ हि सर्प इव देवि जगद्भ्रमोऽय-
न्त्वय्येव भाति नितरान्त्वदवोधि पुंसः।
आकाशवच्च भवती खलु वर्तमाना-
देवीमनन्तविभवाम्प्रणमामि नित्यम् ॥

अर्थः—

हे देवि! आपको न जानने वाले पुरुष ससार को रज्जु में सर्पविषयक भ्रान्ति के समान आप में मानते हैं, परन्तु आप तो निर्विकार, निर्मलस्वरूप तथा आकाश की तरह वर्तमान हैं। अनन्त ऐश्वर्य युक्त आपको मैं निरन्तर प्रणाम करता हूँ। ५।

× × ×

श्लोक–६

यन्नेति नेति सततं श्रुतयो वदन्ति-
वाचामगोचरमजम्मनसोऽप्यचिन्त्यम् ।
यद् ब्रह्मशुद्धममलञ्च प्रकाशरूप-
न्तच्च त्वमेव, भवतीमनिशन्नमामि ॥

अर्थः—

हे देवि! श्रुतियाँ जिसके लिवे नेति-नेति कहकर निराकार, प्रकाशरूप, मन एवं वाणी से न जानने योग्य वतलाती हैं, वह शुद्ध सत् चित आनन्दस्वरूप ब्रह्म आप ही हैं, मैं आपको सर्वदा नमन करता हूँ। ६।

श्लोक–७

ज्ञानञ्च वोध्यमपि चिन्त्यमथापि गेयं-
सर्वन्त्वमेव सदये ! श्रुतयो गृणान्ति ।
मुक्तिस्त्वदीयचरणाम्बुजलाभ एव—
वन्दे महर्षिविनुताञ्जगदीश्वरीन्त्वाम् ।।

अर्थः—

हे करुणामयी माता ! वेदों का यही निश्चित मत है, कि आप का ही ज्ञान आपका ही वोध, और आपका ही चिन्तन एवं गुणगान होना श्रेयस्कर है। सर्वस्व आप ही हैं। और कुछ भी नहीं आपके चरण कमलों का लाभ होना ही मोक्ष है। महर्षि गणों से सेवित ! हे संसार की अधिष्ठात्री माँ दुर्गे ! मैं आपकी वन्दना करता हूँ। ७ ।

× × ×

श्लोक–८

केचिद् भजन्ति मनुजाः पुरुषोत्तमं वै-
केचिज्जपन्ति भुवि शान्तमजम्महेशम् ।
केचिन्निराकृतिमजङ्गनस्वरूप-
न्देवीमनाथशरणं सततम्भजेऽहम् ।।

अर्थः—

हे देवि ! संसार में कुछ लोग पुरुषोत्तम नारायण का मनन करते हैं, तथा कुछ शान्तस्वरूप, अजन्मा महेश्वर शंकर का जप करते हैं, तथा निर्गुण के उपासक अज, आकाशस्वरूप, ब्रम्ह का ध्यान करते है, परन्तु मैं केवल अनाथों की आश्रयरूप, आपका ही चिन्तन करता हूँ। ८ ।

× × ×

श्लोक–९

त्रैलोक्यशर्मजननीञ्जननीं विधातु–
विष्णोश्च सर्वमहितस्य सदा शिवस्य ।
विद्याकलर्द्धिजननीम्प्रणताय वन्दे–
भुक्तिप्रदामखिलदेवनुतां हि देवीम् ॥

अर्थः—

हे देवि ! आप तीनों लोकों को सुख देने वाली तथा ब्रम्हा, विष्णु, शंकर की भी जननी हैं । अपने भक्त जन के लिए समस्त विद्याओं, कलाओं तथा समृद्धियों को भी प्रदान करने वाली हैं समस्त देवताओं से पूजित हे देवि ! मैं आपकी वन्दना करता हूँ । ९ ।

× × ×

श्लोक–१०

मुक्त्यर्थिभिर्यतिभिरम्ब ! समाधिनिष्ठै–
र्ध्यातां सदा मुनिवरै रखिलार्थसिद्धयै ।
सम्प्रार्थितां विधिरमेशमहेशपूज्या—
मीड्यामभीष्टवरदाम्प्रणमाम्यनन्ताम् ॥

अर्थः—

हे माता ! समाधि में स्थिति होकर मोक्ष के अभिलाषी योमीजन सदा आपका ध्यान करते हैं, तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिए आपसे प्रार्थना करते हैं । ब्रम्हा विष्णु तथा शंकर से पूज्य, हे अभीष्ट वर प्रदान करने वाली माँ ! दुर्गे ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ । १० ।

× × ×

श्लोक–११

सर्वेश्वरी च जननी भुवनत्रयस्य–
त्वं स्वेच्छयैव खलु विश्वमयी विभासि ।
त्वन्दुष्ट दैत्य दलनाय विभर्षि रूपा-
णीष्ट प्रदानि भजते प्रणमामि दुर्गाम्

अर्थः—

हे दुर्गे ! आप सब की ईश्वरी हो ! अपनी इच्छा से तीनों लोकों की जननी हो ! आप ही विश्वरूप से शोभित हैं । दुष्ट दैत्यों के निनाश तथा भक्तों के मनोरथों की सिद्धि के लिए आप अनेकों स्वरूप धारण करती रहती हो, मैं आपको नमस्कार करता हूँ । ११ ।

× × ×

श्लोक–१२

त्वान्दुर्गनाशनकरीम्प्रवदन्ति दुर्गां-
विन्ध्याद्रिवासनिरताङ् खलु विन्ध्यवासाम् ।
त्वाञ्चण्डिकाम्भुवि वदन्ति हि चण्डकोपाद्
वन्दे प्रपन्नवरदाम्परमां हि देवीम् ।।

अर्थः—

हे देवि ! दुर्ग नामक दैत्य का विनाश करने से आपको दुर्गा देवी विन्ध्याचल में निवास करने से विन्ध्यवासिनी, प्रचण्ड क्रोध करने से चण्डिका देवी कहकर भक्त पुकारते हैं । शरण मे आये हुये भक्तों की अभीष्ट सिद्धि करने वाली हे दुर्गे ! मैं आपकी बन्दना करता हूँ । १२ ।

श्लोक–१३

त्वम्भक्तपापनिवहं विनिहंसि सद्य–
स्त्वम्भक्तकामनिवहं हि पिपर्षि नित्यम् ।
त्वम्भुक्तिमुक्तिसुगतीर्भजते ददासि–
त्वां सर्वदेवमहिताम्प्रणमामि दुर्गाम् ।।

अर्थ:—

हे दुर्गे ! आप भक्तों के पाप समूह को शीघ्र ही नष्ट कर डालती हैं और भक्तों के मनोरथ नित्य पूर्ण करती हैं तथा उपासना में लगे हुये भक्तों को भोग और मोक्ष एवं सुन्दर गति को प्रदान करती हैं। सम्पूर्ण देवताओं से पूजित माता ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। १३ ।

× × ×

श्लोक–१४

त्वन्दुष्टदैत्यमहिषासुरनाशकर्त्री–
त्वञ्चण्डमुण्डविनिपातनशर्मदात्री
शुम्भासुरञ्च विनिहत्य तथा निशुम्भं– ।
वन्दे व्यधाः सुखि जगत् ! परमेश्वरीन्त्वाम् ।।

अर्थः—

हे परमेश्वरी ! आप दुष्ट महिषासुर दैत्य का विनाश करने वाली हैं। शुम्भ और निशुम्भ नामक दैत्य को मार कर आप सम्पूर्ण संसार को सुखी बनाने वाली हैं। में आपकी बन्दना करता हूँ। १४ ।

× × ×

श्लोक–१५

सृष्ट्वा चराचरमिदं विविधस्वरूपं-
शक्त्या स्वया च परिपासि, विनाशमिच्छुः ।
अन्ते च विश्वमखिलंविनिधाय चान्त-
श्शेषे च देवमहिताम्प्रणमामि दुर्गाम् ।।

अर्थः—

हे देवि ! 'आप अनेक रूपधारी चर और अचर संसार को अपनी माया शक्ति से बनाकर उसका पालन तथा रक्षण करती हैं। प्रलयकाल में सम्पूर्ण विश्व को अपने शरीर में अन्तर्निहित करके शयन करती रहती हैं; समग्र देवताओं से पूजित हे देवि ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। १५ ।

× × ×

श्लोक–१६

मातस्त्वमेव जननी जनको गुरुर्मे
बन्धुः, सखा सुहृदपारकुलं, वलञ्च ।
सर्वन्त्वमेव मम पापचयस्य दुर्गे !
भक्तप्रियामखिलदेवनुतान्नमामि ।।

अर्थः—

हे देवि ! आप ही मेरी माता, पिता व गुरू, बन्धु, मित्र, सुहृद् अपार कुल तथा बल हैं। मुझ जैसे पापी की सब कुछ सर्वस्व धन आप ही हैं। भक्तों की प्रिय लगने वाली, सभी देवताओं से वन्दित ! माँ दुर्गे ! मैं आपकी वन्दना करता हूँ। १६ ।

× × ×

श्लोक–१७

विन्ध्याचलोऽपि भजते भवतीमुदारा-
म्मातस्त्वदीयपदपद्म समाश्रितस्सः ।
मुक्तिर्भवेन्मम यथा हि गिरित्वभावा-
त्प्राप्यार्चनाम्भुवि करोमि मनुष्यजन्म ।।

अर्थः:—

हे मातः ! यह विन्ध्याचल पहाड़ भी मानों आपके चरण कमलों में आश्रित होकर परम उदार मन से आपका भजन करता है । इसलिए चुपचाप ध्यान सा कर रहा है, और यह चाहता है, कि मेरा कठोर पाषंण का यह शरीर छूट जाय, मनुष्य शरीर मिले, जो कि साधन धाम और मोक्ष का द्वार है, उसे पाकर मैं आपकी अर्चना किया करूँ । १७ ।

× × ×

श्लोक–१८

हे विन्ध्यवासिनि ! दयावति ! शान्तमूर्ते–
शक्त्यालये ! गुणनिधे ! विमलस्वरूपे ।
हे भक्तकल्पलतिके ! जनजीवरूपे !–
त्वां सन्ततम्मनसि चाष्टभुजाम्भजामि ।।

अर्थः—

हे विन्ध्यवासिनी देवि ! हे दयामयी ! हे शान्तमूर्ति ! हे शक्ति स्वरूपिणी हे गुणसागर ! हे निर्मल रूपवाली ! हे भक्तों के लिए कल्पलता के समान तुरन्त फल देने वाली ! हे जन प्राणरूप ! हे अष्ट भुजाधारिणी माँ ! आपका मैं ध्यान व भजन करता हूँ । १८ ।

× × ×

श्लोक–१९

हे ! सिंहवाहिनि ! महीयसि गुह्यरूपे !–
त्रैलोक्यमोहिनि ! तपोमयि ! वेदगम्ये ।
चैतन्यरूपिणि ! सनातनि ! सर्वशक्ते !–
त्वाम्मातरम्मनसि चाष्टभुजाम्भजामि ।।

अर्थः—

हे सिंह वाहिनी दुर्गे ! हे श्रेष्ठ हे गुप्तरूपधारिणी ! संसार को मोहित करने वाली हे महाशक्ति ! तपोरूपिणी ! वेदों से जानने योग्य ! हे चैतन्यरूप ! सदा एक भाव से विराजमान हे शक्ति समन्विते ! हे आठ भूजा धारण करने वाली माता ! मैं आपका मन में ध्यान एवं चिन्तन करता हूँ । १९ ।

× × ×

श्लोक–२०

हे ! पद्मवासिनि ! सुपद्मकरे ! च लक्ष्मि !–
ब्रह्माण्डनाशिनि ! भयङ्करि ! कालिके हे ।
वीणाधरे ! भुवि ! सरस्वति ! गानशीले !–
देवीत्रयं सततमार्तिहरं स्मरामि ।।

अर्थः—

हे कमल स्थिते ! कमल धारिणी ! लक्ष्मी स्वरूप में स्थित माता महालक्ष्मी । तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का विनाश करने वाली भयंकर रूप धारण करने वाली माता ! महाकाली ! एवं वीणाधारिणी ! भू लोक सदा गानशील माँ महासरस्वती ! सम्पूर्ण कष्टों का निवारण करने वाली तीनों महाशक्तियों का मैं स्मरण करता हूँ । २० ।

× × ×

श्लोक–२१

हे ! रक्तवीजतनुशोणितपानशीले !–
हे ! शुम्भकैटभनिशुम्भविनाशलीले ।
हे ! सर्गपालनविनाशनकर्मदक्षे !–
हे ! भद्रकालि! भवतीं हृदि चिन्तयामि ।।

अर्थः—

रक्त बीज नामक दैत्य के शरीर के खून को पीने वाली ! महाकाली ! रणचण्डी ! शुम्भ कैटभ व निशुम्भ जैसे प्रचण्ड दैत्यों के विनाश की लीला करने वाली ! संसार की सृष्टि, पालन व संहार करते में निपुण ! हे भद्रकाली मैं हृदय में आपका चिन्तन करता हूँ । २१ ।

× × ×

श्लोक–२२

हे ! भद्रकालि ! वगले ! कमले ! च तारे !–
धूमावति ! त्रिपुरसुन्दरि ! छिन्नमस्ते !
मातङ्गि ! षोडशि ! महाभुवनेश्वरीति !
देवीर्नमामि शिरसापरमार्थदात्रीः ।।

अर्थः—

हे भद्रकाली ! (महाकाली !) हे बगले हे महालक्ष्मी ! हे तारा ! तथा हे धूमावती ! हे त्रिपुर सुन्दरी ! हे छिन्नमस्तकधारिणी ! हे मातंगी ! हे षोडशी ! हे भुवनेश्वरी ! हे (हे राजराजेश्वरी!) दश महा-विद्यारूपधारिणी ! परमपदरूप मोक्ष के प्रदान करने वाली देवि ! मैं शिर से आपको नमस्कार करता हूँ । २२ ।

× × ×

श्लोक–२३

यावज्जनोऽहं भवतीमविचिन्त्यशक्ति–
संसेवतेजऽहरिशर्वसुरेशसेव्याम् ।
तावत्प्रयाति नरकं वहुदुःखरूप–
न्ध्यायामि विश्वजननीं विमलस्वरूपाम्

अर्थ –:

सम्पूर्ण संसार की माता देवि दुर्गे ! जव तक मनुष्य अनन्त शक्ति-शालिनी, ब्रह्मा, विष्णु व शंकर से भी पूज्य आपकी सेवा नहीं करता है, तव तक वह अनेक दुःखों को प्राप्त करता रहता है । हे निर्मलरूपधारिणी ! महाशक्ति ! मैं आपका ध्यान करता हूँ । २३ ।

× × ×

श्लोक–२४

सम्पूर्णदोषनिलयोऽपि सुकर्महीनः –
सन्त्यज्यते नहि कदाऽपि सुतो जनन्या ।
संरक्ष्यते हि कृपया कुसुतोऽपि यत्ना–
त्त्वान्नौमि देवि ! भजते सकलार्थदात्रीम् ।।

अर्थः—

हे देवि ! सम्पूर्ण दोषों से युक्त, शुभकर्मो से रहित भी कुपुत्र को माता नहीं त्यागती है किन्तु यत्तपूर्वक उसकी निरन्तर रक्षा ही करती है इसी आशा मे मैं भी सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति करने वाली आपका हृदय से नमन करता हूँ । २४ ।

× × ×

श्लोक–२५

वाणी ममास्तु भवतीगुणवर्णयित्री–
पुजाविधाननिरतौ तु करौ भवेताम् ।
मन्मानसे तु करुणामयमञ्जुमूर्ते–
स्स्यादम्बिकेऽत्र वसतिः सततञ्जनन्याः ।।

अर्थः—

हे जगदम्ब ! मेरी वाणी आपके गुण वर्णन में संलग्न रहे, मेरे हाथ आपकी पूजा के विधान में लगे रहें । और मेरे मन में आपकी मनोहर दिव्य मूर्ति का वास रहे, सदा मैं यही चाहता हूँ । २५ ।

× × ×

श्लोक–२६

सम्प्राप्य पूर्वसुकृतेन मनुष्यजन्म–
पुण्येषु कर्मसुरतः परमेश्वरीञ्च ।
योऽर्चेत् सदा भगवतीम्परमार्थदात्री–
न्धन्यः स एव पुरुषो भुवनत्रयेऽपि ।।

अर्थः—

हे अम्ब ! पूर्व जन्म के शुभ कर्मो के प्रभाव से मनुष्य शरीर पाकर शुभकर्मों का साधन करते हुये जिस साधु भक्त ने परम पद को प्राप्त करने वाली भगवती दुर्गा का पूजन किया, वही मनुष्य तीनों लोक में धन्य है । शक्ति का आराधक त्रैलोक्य को भी अपने आधीन बना सकता है । २६ ।

× × +

श्लोक–२७

हे ! सर्वमङ्गलमये ! कमलालये ! हे !–
दीनार्तरक्षणपरे ! जगदम्बिके हे ।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमहिते ! विजयप्रदे ! हे !–
हे देवि ! दीनहृदये ! परिपाहि दीनम् ।।

अर्थः—

हे समस्त मंगलों की निधि ! हे देवि ! हेकमल पर निवास करने वाली ! दीन और दुखी जनों की रक्षा में तत्पर माता । ब्रह्मा, इन्द्र, शंकर से पूजित विजयप्रदे देवि ! दीनों का हृदय में ध्यान करने वाली करुणावती ! अब इस शरण में आपे हुये दीन जन की रक्षा कीजिये । २७ ।

× × ×

श्लोक–२८

सर्वार्थदायिनि ! रमे त्रिगुणालये हे !–
दुर्गे ! प्रसन्नहृदये ! गरुड़ासने हे ।
त्रैलोक्यरूपिणि ! जये ! कमलेक्षणे हे !–
हे भक्तरक्षणपरे ! कुरु भक्तरक्षाम् ।।

अर्थः—

हे सम्पूर्ण कामनाओं को प्रदान करने वाली ! हे लक्ष्मी ! सतोगुण रजोगुण और तमोगुण को धारण करने वाली, हे दुर्गे । प्रसन्न चित्त वाली, गरुण पर चलने वाली । हे संसारस्वरूपे हे कमल सदृश्य लोचन धारिणी ! जयरूपिणी ! भक्त का परित्राण करने वाली माता दुर्गे ! अब इस भक्त की भी रक्षा कीजिये । २८ ।

× × ×

श्लोक–२९

हे ! निर्गुणे ! सगुणरूपधरे ! शुभे हे !
निर्वाणदायिनि ! महेश्वरि ! हेऽन्नपूर्णे !
हे ! मानदायिनि ! सुतारिणि ! हे जयन्ति–
हे पापनाशिनि ! विनाशय पापजालम् ।।

अर्थः—

हे निराकार स्वरूपिणी ! तथा सगुणरूप धारिणी ! हे शुभरूप हे मोक्ष की प्रदांत्री ! हे महेश्वरी ! हे अन्नपूर्णा ! मानप्रदे ! संसार सागर से पार करने वाली ! हे जयन्ती ! हे पाप का विनाश करने वाली माँ दुर्गे ! मेरे समस्त पाप के जाल काट दीजिये । २९ ।

× × ×

श्लोक–३०

हे ! पापपर्वतविनाशिनि ! विश्ववन्द्ये !–
शान्ते ! शशाङ्कविमले ! शुभदे ! विशोके !
हे ! शंसनींयचरितेऽखिलभव्यलीले !–
हे पद्मधारिणि ! दयावति ! पाहि दीनम् ।।

अर्थः—

हे पाप समूह को नष्ट करने वाली ! हे विश्व वन्दित ! हे शान्ति स्वरूपिणी ! चन्द्रमा की तरह निर्मल कान्ति वाली ! शुभ प्रदे ! हे शोक रहित हे प्रशसनीय चरित्र वाली ! हे समस्त शुभ लीलावती ! हे कमलधारिणी ! दयावती माँ दुर्गे ! इस दीन की अब शीघ्र रक्षा कीजिए ।

× × ×

श्लोक–३१

हे ! विश्वधारिणि ! यशस्विनि ! योगमाये !–
त्रैलोक्यसुन्दरि ! सुरेश्वरि ! सर्वविद्ये ।
हे ! भूतभाविनि ! जगन्मयि ! सुप्रकाशे !–
हे ! मोहहारिणि ! निवारय मोहबन्धम् !–

अर्थः—

हे संसार को धारण करने वाली ! उज्वल यशवाली ! हे योग माया! तीनों लोकों में सुन्दर ! देवताओं की अधिष्ठात्री हे सम्पूर्ण विद्यारूपिणी ! प्राणियों की आधार भूत ! हे जगन्मयीमाता ! सुन्दर प्रकाशवती ! मोह हारिणी ! हे देवि ! दया करके इस दीनजन को महामोह के बन्धन छुड़ाइये । ३१ ।

× × ×

श्लोक–३२

हे ! योगरूपिणि ! परेश्वरि ! दानशीले !–
पुण्यप्रदे ! सुखनिधेऽखिलरम्यरूपे ।
संहारकारिणि ! कलावति ! भव्यगात्रे ।–
हे ! क्लेशनाशिनि ! विनाशय 'कष्टयोगम्

अर्थः—

हे योगस्वरूपणी ! सम्पूर्ण विश्व में श्रेष्ठ ! दानशील ! पुण्य देने वाली ! हे अनन्तसुखस्वरूपवाली ! हे संहारका कारिणी, हे सर्वकला हे सुन्दर शरीर धारिणी ! हे क्लेश नाशिनी ! माँ दुर्गे मेरे कष्टयय विनाश कीजिये । ३२ ।

× × ×

श्लोक–३३

हे ! कालकारिणि ! विभावति ! गीतलीले !
कैवल्यदायिनि ! विकाशिनि ! भावरूपे ।
ब्रह्मर्षिब्रह्महृदये ! सुखदे ! विरक्ते !–
हे दीनपालिनि ! विपालय मामनाथम् ।।

अर्थः—

काल (समय) को कारण बनाने वाली ! हे प्रकाश रूप ! सम्पूर्ण भक्तों के द्वारा जिसकी लीलाओं का नित्य गुणगान होता है, ऐसी माता मोक्षदायिनी ! विकास शक्ति समन्वित ! भावानुसार विभिन्न रूप धारिणी ! ब्रह्मर्षि एवं वेदों की हृदयभूत ! सुख देने वाली ! हे त्यागमूर्ति ! दीनों की रक्षा करने वाली ! मां दुर्गे ! अब मुझ अनाथ की रक्षा कीजिए । ३३ ।

× × ×

श्लोक–३४

हे वेदगामिनि ! गरीयसि ! वेदगर्भे !–
हे वेदरूपिणि ! मतीश्वरि ! वेदमातः !
हे ! वेदवाणि ! जगदीश्वरि ! वेदवन्द्ये !–
हे ! वेदगीतचरिते ! परिपाहि दीनम् !

अर्थः—

हे वेदानुकूल आचरण करने वाली ! हे गम्भीर स्वभाववाली ! वेदों को धारण करने वाली ! हे वेदरूप ! वेदमाता (गायत्री) हे वेदवाणी । हे बुद्धि की अधिष्ठात्री ! वेदों से वन्दनीय । वेदों से गीत चरित्र वाली । अब इस दीन जन की रक्षा कीजिये । ३४ ।

× × ×

श्लोक–३५

मातस्तवैव भृतको निरुपायबोधो––
दोषालयः कुपतितो नितरामनाथः ।
त्वत्पादपद्मयुगले पतितस्सुतोय–
न्दीनस्त्वया सदयया हि निरीक्षणीयः ।।

अर्थः—

हे माता । उपाय रहित मूर्ख एवं सम्पूर्ण दोषों से युक्त अत्यन्त अन
पतित व दुखी-आपके चरण कमलों में प्रगत यह बालक आपके द्वारा करुणा
कृपा दृष्टि से सर्वथा देखने योग्य है । इतने अधिक दोषों से परिपूर्ण इस अना
जन को आप ही अपना आश्रय देकर संसार सागर से पार पहुँचा सकती हैं।

× × ×

श्लोक–३६

दीनो जनो भुवि मया सदृशो न मात-
र्लब्धो न लप्स्यस इहास्ति न वर्तमानः ।
पापालयः कुचरितो भुवनत्रयेऽपि––
त्वामन्तरा न शरणम्परिपाहि दीनम् ।।

अर्थः—

हे माता । तीनों लोकों में मेरे सदृश्य पापी कुचरित्र अनाथ
आपको न मिला होगा और न इस समय धरातल पर वर्तमान ही है
भविष्य में भी प्राप्त न हो सकेगा ।

इसलिये हे अशरण शरण । माँ दुर्गे । इस निराश्रित दीन जन
रक्षा कीजिये । ३६ ।

× × ×

श्लोक--३७

यावज्जनेन जननीपदपद्मरेणु--
स्संसेव्यते नहि कदापि मनुष्यजन्म ।
लब्ध्वानिशं सुरगणैरपि सेव्यमान-
स्तावत्प्रयाति खलु संसृतिदुःखजालम् ।।

अर्थः—

हे माता । संसार में मनुष्य जन्म पाकर भी जिस मनुष्य ने जब तक देवताओं से सेवनीय आपके चरण कमलों की पवित्र रज का सेवन नहीं किया तब तक वह निरन्तर संसार के दुःखजाल को प्राप्त ही करता रहेगा । संसार सागर से पार जाना उसके लिए बहुत कठिन कार्य होगा । ३७ ।

× × ×

श्लोक--३८

तत्वन्त्वदीयममितम्मुनियोगिवृन्दै--
र्न ज्ञायते विधिरमेशहरादिदेवैः ।
अम्बेति वाक्यकथनन्त्वनिशं हि जान-
ञ्जाने कुतोऽहमतिमन्दमतिः कुबालः-

अर्थः—

हे माता । जब आपके विशेष तत्व को मुनि, योगीजन तथा ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि देवता भी नहीं जान सके, तो फिर अत्यन्त मन्द बुद्धिवाला कुपुत्र मैं आपके महनीय तत्व को कैसे जान सकता हूँ । मैं तो केवल अस्फुटस्वर में अम्ब, अम्ब ही कहना जानता हूँ । ३८ ।

× × ×

श्लोक–३९

वाणी गुणानुकथने न च वर्तते नः–
कर्णौ न चाकलयतश्शुभदाङ्कथान्ते ।
नेत्रे करौ च तव दर्शनकन्नपूजा–
न स्याद्गतिर्नभवती करुणावती चेत् ॥

अर्थः—

हे अम्ब । हमारी वाणी आपके गुण कथन में नहीं लग रही है । हमारे कान आपकी शुभकथा को ध्यान से नही सुन रहे हैं, नेत्र आपके दर्शन से विमुख हो रहे हैं । हाथ भी पूजा के संविधान से अलग हो रहे हैं, ऐसी स्थिति में हे माता । यदि आप अपनी अकारण करूणा भाव प्रदर्शित न करेंगी तो फिर मेरा संसार में कोई भी सहारा नहीं है आपके चरण-कमलों का आश्रय ही मेरा सुदृढ़ अवलम्बन है । ३९ ।

× × ×

श्लोक–४०

लोकेशविष्णुगिरिशा अधिपास्सुराणा–
म्मामम्ब पापनिचयञ्चलु दोषपूर्णम् ।
शक्ता न तारयितुमत्र सुकर्महीन–
ङ्क्यामि देवि ? शरणम्भवतीं विहाय ॥

अर्थः --

हे माता अनेक दोषों से युक्त मुझको ब्रह्मा विष्णु और शंकर भी संसार सागर से पार न करेंगे । ऐसी दशा में हे देवि । आपकी शरण को छोड़कर और मैं कहाँ जाऊँ । ४० ।

× × ×

श्लोक ४१

एतादृशञ्जनमिमम्पतितम्भवाब्धौ–
दृष्ट्वापिदीनमधिकन्निरुपायमम्बे ।
सर्वेऽपिदैवतगणाः समुपेक्षकाश्चे–
न्नस्याद्भयम्भगवती भवतीप्रसन्ना ।।

अर्थः—

हे माता समस्त पापयुक्त एवं सम्पूर्ण दोषयुक्त संसार सागर में डूबता हुआ-अधिकदीन तथा उपायों से रहित मुझे देखकर भी समस्तदेव समुदाय यदि उपेक्षा करें, कृपा कदापि न करें तो मुझे कुछ भी भय नही हे यदि दया की मूर्ति माँ आप प्रसन्न हैं । ४१ ।

× × ×

श्लोक ४२

दोषान्न वा मयि विचारय पापसिन्धौ–
बालन्निराश्रयमनाथमनाथमातः ।
अङ्के निधेहि कृपया स्वजनम्विधेहि–
लोके रुदन्स्मरति मातरमेव बालः ।।

अर्थः—

हे अशरण शरण । माता पापस्वरूप मुझ में दोषसमुदाय देखकर विचार न कीजिये, इस अनाथ पुत्र को अपना कर अपनी स्नेहमयी गोद में स्थान दीजिये, आप स्वयं विचार करें, कि संसार मे अनाथ बालक रोता हुआ माता की ही शरण में जाता है । उसके दुःख को दूसरा कैसे दूर कर सकेगा । ४२ ।

× × ×

श्लोक ४३

दोषालयञ्च पतितञ्चलु पापरूप–
म्मांस्त्वञ्जहासि यदि दोषगणन्निरीक्ष्य ।
कस्स्याद्गतिस्त्रिभुवने भ्रमतो जनस्य–
मातस्तवैव चरणं शरणम्ममास्तु ॥

अर्थ.—

हे माता यदि दोषालप तथा पापरूप एवं पतित समझकर आप मेरी उपेक्षा कर देती हैं, तीनों में निराश्रय भटकते रहने पर मेरी सुगति न बन सकेगी, इसलिये आपके चरणों की शरण में ही में स्वयं उद्धारक बन सकूँगा। आपके चरणों का अवलम्ब ही मेरी गति है। ४३।

× × ×

श्लोक ४४

मातर्जपो नहि तपो न गुणाभिधान–
न्ध्यानन्नपूजनविधिर्नच पादसेवा ।
आवाहनादिकमथापि न यन्त्रपूजा–
चाम्बेति मन्त्रमनिशम्मनसा जपामि ॥

अर्थ:—

हे माता मैं मन, वाणी तथा शरीर से आपका जप तथा तप करने में असमर्थ हूँ। आपके आबाहन तथा मन्त्र की पूजा बिधि का भी मुझे ज्ञान नहीं हैं। केवल हे अम्ब, इस मन्त्र का जप निरन्तर मनसे जपता रहता हूँ। ४४।

× × ×

श्लोक–४५

मत्तोऽधिको न भुवने भुवनाधिपे हे ?—
पापी कुतर्कनिरतः कुविचारलीनः ।
मिथ्यावचा गुरुसुरार्चनकर्महीनो—
मातस्स्वकीयचरणं शरणम्विधेहि ॥

अर्थः—

हे समस्तभुवनों की अधीश्वरी । माता । इस संसार में मुझसे अधिक पापी कुतर्क तथा निन्दित विचारों में संलग्न मिथ्याभाषी, गुरुजन तथा देवादि पूजन से रहित कोई भी न मिलेगा । अतएव माता, ऐसे महापापी को अब आप ही अपने चरणों की शरण दीजिये । ४५ ।

× × ×

श्लोक–४६

आपत्पयोनिधितरङ्गनिपीडितोऽह—
म्पापानलेन परिदग्धसमस्तसारः ।
कालाहिदष्टतनुको बलबुद्धिहीनो—
याचे तवैव जगदम्ब ! पदावलम्बम् ॥

अर्थः—

हे संसार की माँ दुर्गे । मैं आपत्ति रूपी समुद्र की तरंगों में फंस गया हूँ, पाप की अग्नि में सम्पूर्ण बल भस्म हो चुका है । इस कालरूपी सर्प से डसा गया, सामर्थ्य बल बल व बुद्धि से हीन मैं केवल आपके ही चरणों का सहारा चाहता हूँ । ४६ ।

× × ×

श्लोक–४७

कामादिदोषनिचयाः परिपीडयन्ति––
रुग्भिर्विहन्यत इदं सततं शरीरम् ।
लोलम्मनो न तव पादयुगे सुलग्न––
न्त्वामाश्रयेहि जगदम्ब । निराश्रयोऽहम् ।।

अर्थः—

हे जगन्माता दुर्गे । काम, क्रोध, लोभ आदि अनेक दोष समुदाय चित्त को विशेष पीड़ित कर रहे हैं । यह चंचल मन भी आपके चरण कमलों में नहीं लग रहा है । ऐसी स्थिति में आश्रय रहित जन की आश्रय आप ही हैं । ४७ ।

× × ×

श्लोक–४८

पुत्रान् स्वभक्तिनिरतान् परिपासि नित्य–
न्दुष्टान् सुतानपि तथैव च भक्तिशून्यान् ।
मामक्षमं सकलसाधनभक्तिहीन–
न्त्वं रक्ष रक्ष जगदम्ब ! शिवे दयालो ।।

अर्थः—

हे करुणामयी । जगन्माता । आप जिस प्रकार भक्तिमान पुत्रों की रक्षा करती हैं । उसी प्रकार भक्ति शून्य साधनहीन पुत्रों की भी । इसलिये माता कृपा कर समस्त साधनों से रहित, भक्तिहीन, सर्वथा असमर्थ मेरी भी रक्षा कीजिये । आप अत्यन्त करुणामयी एवं परम कृपालु हैं । ४८ ।

× × ×

श्लोक–४९

त्वत्पादपद्मयुगलेऽम्ब निवेदितात्मा–
कर्माणि यानि विदधे हि शुभाशुभानि ।
त्वत्प्रेरणैव शुभदे ! खलुहेतुभूता–
तत्पापपुण्यफलभारमिहार्पयेऽहम् ॥

अर्थः—

हे माता ! आपके चरणों में मैं अपना सब कुछ अर्पण कर चुका हूँ, यहाँ तक कि जो भी शुभ या अशुभ कर्म करता हूँ, वे सब आपकी ही प्रेरणा से होते हैं, उनके पाप और पुण्यरूप फल भी आप के लिये ही अर्पित करता हूँ । आपकी दया छोड़कर और मुझे कुछ भी नहीं चाहिए । ४९ ।

× × ×

श्लोक–५०

प्राणेन्द्रियादिसहितञ्च शरीरमेतद्–
यावत् स्थितञ्जननि हे ! क्षणभङ्गुरम्मे ।
तावद्धि देवि ! विधिविष्णुमहेशसेव्य–
न्दुर्गेति नाम सततम्मनसास्मरामि ॥

अर्थः—

हे देवि ! प्राण, तथा इन्द्रिय आदि से युक्त, क्षण भर में विनष्ट होने वाला यह शरीर जब तक इस संसार में स्थित रहे, अर्थात् जब तक मैं जीवित रहूँ, तब तक ब्रह्मा, विष्णु व शंकर से भी सेव्य 'जय दुर्गे' इस पवित्र नाम मन्त्र का प्रतिक्षण मन से स्मरण करता रहूँ । ५० ।

× × ×

श्लोक–५१

मातस्त्वदीय पदपङ्कजसेवकेन–
स्तोत्रेकृते तव रुचि; क्वचिदत्र न स्यात् ।
याचे तथापि निजपुत्रकृतं विचार्य–
त्वङ्गीकुरुष्व सततङ्कृपया स्तवन्नः ।।

अर्थः—

हे जगन्माता ! आपके चरण सेवक द्वारा विरचित इस स्तोस्त्र में आपकी रुचि न भी हो, फिर भी, मैं आपसे क्षमा चाहता हुआ इतना अवश्य अन्त में निवेदन करूँगा कि अपने पुत्र की कृति समझकर कृपा पूर्वक इस 'देवीस्तोत्रम्' को सदा स्वीकार कीजिये । ५१ ।

× × ×

श्लोक–५२

भूनेत्रशून्यनयने खलु वैक्रमेब्दे–
मास्याश्विने गुरुदिने सुदि वै नवम्याम् ।
एषा स्तुतिर्विरचिता शिवशास्त्रिणाम्बा–
पादे सुमाञ्जलिनिभा हि समर्पिता च ।।

अर्थः—

सम्वत् २०२१ आश्विन (कुआर) सुदी नवमी गुरुवार को शिवदत्त शास्त्री ने इस स्तोत्र का निर्माण कर पुष्पाञ्जलि सदृश, जगदम्बिका के चरणों में समर्पण कर दिया । ५२ ।

× × ×

श्लोक–५३

एतां स्तुतिं यदि पठेन्मनुजः प्रभक्त्या–
ध्यायञ्छिवामविरतन्तु समाहितात्मा ।
देव्याः सदैवलभते भुवि कामपूगा–
नन्तेचयाति सुगतिङ्कृपया दयालोः ॥

१–इटावा मण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामवास्तव्यविद्वत्सार्वभौम श्री पं० श्यामलाल शर्मतनुजनुषा श्री पं० शिवदत्तशास्त्रिणा विरचितं देवीस्तोत्रं समाप्तम् ।

अर्थः—

जो मनुष्य भक्ति पूर्वक सावधान चित्त से भगवती का ध्यान करता हुआ इस देवीस्तोत्र का पाठ करेगा, तो वह दयामयी जगदम्बा की कृपा से निरन्तर सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त करता रहेगा, तथा अन्त में सुन्दर गति को प्राप्त होगा । ५३ ।

२–इति श्री पं० शिवदत्त शास्त्री से रचित श्री देवी स्तोत्र का अर्थ समाप्त ।

× × ×

॥ अथ श्री ॥

विन्ध्यवासिन्यष्टकम्

श्लोक–१

मुनीन्द्रवृन्दमानसैरहर्निशन्तु भावितां–
समग्रभूतहृष्टये कृपाकटाक्षवाहिनीम् ।
शरत्सुधांशुराजिताननारविन्दभासिनी–
मजस्त्रमन्दहासिनीन्नमामि विन्ध्यवासिनीम् ॥

अर्थः—

हे विन्ध्याचल पर निवास करने वाली देवि ! श्रेष्ठ मुनिगण सदा आपका ध्यान करते हैं । आप सम्पूर्ण प्राणियों के कल्याणार्थ कृपा को धारण करने वाली हैं । शरत्कालीन चन्द्रमा के सदृश्य शोभित मुखकमल से प्रफुल्लित सदा मन्द-मन्द हास करने वाली हैं, मैं आपको नमस्कार करता हूँ । १ ।

× × ×

श्लोक–२

निजायुधैर्हि शक्तिखेटवज्रचक्रदण्डकै–
र्निशुम्भशुम्भदुर्गदैत्यदारणेनविश्रुताम् ।
रणे च रक्तवीजरक्तपानवद्धलालसा–
मशेषविघ्ननाशिनीन्नमामि विन्ध्यवासिनीम् ॥

अर्थः—

हे विन्ध्यवासिनी ! आप शक्ति, खेट, वज्र, चक्र, दण्ड आदि अपने आयुधों से शुम्भ निशुम्भ, दुर्ग आदि दैत्यों का संहार करने से जगत् में प्रसिद्ध हैं । समरभूमि में रणचण्डी बनकर रक्तबीज दैत्य के रक्तपान में उत्कट अभिलाषा रखने वाली हैं । समस्त विघ्नों की विनाशक आपको मैं नमस्कार करता हूँ । २ ।

श्लोक–३

रणे सुरारिसूदने विशेषशक्तिभूषिता–
मशेषदेववृन्दभक्तमानवैश्चवन्दिताम् ।
स्वदिव्यतेजसा भृशं समस्तलोकभासिनीं–
समग्रमोहनाशिनीन्नमामि विन्ध्यवासिनीम् ।।

अर्थः—

हे विन्ध्यवासिनी देवि ! आप संग्राम में दुष्ट दैत्यों के विनाशार्थ ब्राह्मी, वैष्णवी, शैवी, ऐन्द्री आदि शक्तियों से भूषित होती हैं। आप सम्पूर्ण देवता तथा भक्तसमुदाय से बन्दित हैं। अपने दिव्य तेज से समस्त संसार को प्रकाशित करने वाली हैं। समग्रमोह का विनाश करनेवाली आपको मैं नमस्कार करता हूँ। ३।

× × ×

श्लोक–४

कृपासुधाप्रवाहवाहनेन देवनिम्नगां–
सहस्त्रभक्ततारणेन भूतले यशस्विनीम् ।
प्रचण्डचण्डमुण्डघातनेन शौर्यमण्डितां–
स्वदेहकान्तिकाशिनीन्नमामि विन्ध्यवासिनीम् ।।

अर्थः—

हे विन्ध्वासिनी ! आप कृपारूपी अमृत प्रवाह को प्रवाहित करने वाली देवनदी गंगा के सदृश हैं। असंख्य भक्तों का उदार करने के कारण आपका यश संसार में फैला हुआ है। प्रचण्ड चण्ड–मुण्ड आदि दैत्यों के मारने से आप शौर्य गुण सुशोभित हैं। अपने दिव्य शरीर की पुण्य कान्ति से प्रकाशित आपको मैं नमस्कार करता हूँ। ४।

श्लोक—५

स्वमन्त्रसिद्धिकामनाभृतैर्जनैस्सुसेविता-
मनन्तभक्तदेवलोकमण्डलेन पूजिताम् ।
जगद्विधानपालनादिहेतु भूत भासिनीं—
स्वभक्तिमुक्तिमापिनीन्नमापि विन्ध्यवासिनीम् ।।

अर्थ—

हे विन्ध्यवासिनी ! अपने मन्त्र की सिद्धि तथा कामनाओं की पूर्ति के इच्छुक भक्तजनों से आप सेवित हैं। तथा अनन्त भक्त एवं देवता समूह से पूजित हैं। संसार की रचना-पालन एवं संसार के लिये ब्राह्मी, वैष्णवी, महाकाली पार्वती आदि रूपों को आचरण करने वाली हैं अपनी भक्ति से मुक्ति का मापन करने वाली आपको मैं नमस्कार करता हूँ। ५।

× × ×

श्लोक—६

स्तुतिक्षणे सदैव भक्तसम्मुखे कृतास्पदां—
समाधिमग्नतास्थितौहृदिस्वरूपभाविनीम ।।
अनन्यभक्तमानसे प्रतिक्षणम्प्रतिष्ठितां—
समस्तदोषनासिनीन्नमामि विन्ध्यवासिनीम् ।।

अर्थ—

हे विन्ध्यवासिनी ! आप स्तुति के समय भक्त के सम्मुख विराजमान हो जाती है, भक्त के ममाधि में स्थिति हो जाने पर उसके हृदय में अपना प्रकाशमान स्वरूप प्रकट करती हैं। अनन्य भक्त के मानस में तो आप प्रतिक्षण विहार करती रहती हैं, समस्त दोषों का विनाश करने वाली आपको मैं नमस्कार करता हूँ। ६।

× × ×

श्लोक–७

महोच्चविन्ध्यशेखरे प्रकृष्टवासशालिनी–
म्पताकया मुहुर्मुहुस्स्वकीयवासदर्शिनीम् ।
विदूरदेशवासिनो जनान् दृशा प्रसादिनीं-
स्वभक्तकामदायिनीन्नमामि विन्ध्यवासिनीम् ।।

अर्थ—

देवि ! आप अत्युच्च विन्ध्याचल के शिखर पर श्रेष्ठ निवास से सुसोभित हैं, बाहर से आने वालों भक्तों को अपनी पताका से बार-बार अपने निवास स्थान का संकेत करने वाली हैं दूर देश के आये भक्तजनों को अपनी कृपामयी दृष्टि से आह्लाद करने वाली हैं । अपने भक्तों की सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति करने वाली आपको मैं नमस्कार करता हूँ । ७ ।

× × ×

श्लोक–८

मनोरथान् प्रदातुमत्र भूतले समागतां-
स्वभक्तिमात्रवस्तुना सदा प्रसादधारिणीम् ।
भवाप्तदुःखदारिणीम्परात्मतत्व रूपिणी-
म्भवादिदुःखनाशिनीन्नमामि विन्ध्यवासिनीम् ।।

अर्थ—

हे देवि विन्ध्यवासिनी ! आप अपने भक्तों को मनोरथ की पूर्ति के लिये इस लोक में अवतरित हैं । आप केवल अपनी भक्तिरूप वस्तु से ही प्रसन्न रहने वाली हैं, तथा संसारिक आध्यात्मिक, आधिभौतिक, एवं आधिदैविक दुखों को दूर करने वाली हैं । आप सच्चिदानन्दघन, अखण्ड परात्म-तत्वस्वरूप हैं । संसार का आदिकारणभूत, अज्ञान का नाश करने वाली मैं आपको नमस्कार करता हूँ । ८ ।

× × ×

श्लोक–९

अयं स्तुतिप्रसूनकाञ्जलिर्विनिर्मितश्शुभ-
श्शिवेन सेवकेन शक्तिबुद्धिनाऽविलात्मना
समर्पितश्च पूज्ययोः पराम्बिकापदाब्जयो-
र्भवेद्धि विन्ध्यवासिनीप्रसन्नताप्रसूतये ॥

१–इति–श्री पं० शिवदत्तशास्त्रिणाविरचितं–श्रीविन्ध्यवासिन्यष्टकं–
समाप्तम्

अर्थः—

यह स्तुति पुष्पाञ्जलि शक्ति में संलग्न बुद्धि, राग आदि दोषों से दूषित अन्तःकरण वाले सेवक शिवदत्त शर्मा से बनाकर श्री पराम्बिका श्री विन्ध्यवासिनी देवी के चरण कमलों में अर्पण कर दी है। इसे स्वीकार कर श्री विन्ध्यवासिनी देवी प्रसन्न हों।

२–इति–श्री शिवदत्त शास्त्री से रचित श्री विन्ध्यवासिनी अष्टक का अर्थ समाप्त।

× × ×

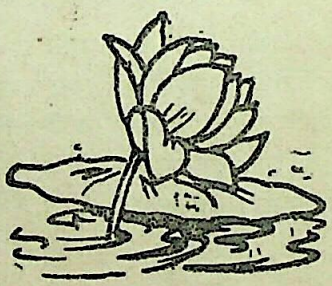

❁परिशिष्ट

जगदम्बा के द्वादश स्थान

मंगलमयी जगदम्बा दुर्गा भारत में द्वादश १२ रूपों में स्थित है। इनके दर्शन से प्राणी समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। जो दर्शन न कर सके, यदि वह समाधान चित्त से प्रातःकाल इनका स्मरण भी कर ले, तो उसे मोक्ष प्राप्त हो सकता है। 'त्रिपुरा रहस्य' नामक ग्रन्थ माहत्म्य खण्ड अध्याय ४८ श्लोक सं० ७१ से ७५ तक उक्त विवरण अंकित हैं यथाः—

काञ्चीपुरे तु कामाक्षी, मलये भ्रामरी तथा,
केरले तु कुमारी सा, अम्बाऽऽनर्तेषु संस्थिता।७१।

करबीरे महालक्ष्मी, कालिका मालवेषु सा,
प्रयागे ललिता देवी, विन्ध्ये विन्ध्यनिवासिनी।७२।

वाराणस्याँ विशालाक्षी, गयायाम्मङ्गलावती,
वङ्गेषु सुन्दरी देवी, नैपाले गुह्यकेश्वरी ।७३।

इति द्वादशरूपेण, संस्थिता भारते शिवा,
एतासान्दर्शनादेव, सर्वपापैः प्रमुच्यते ।७४।

अशंक्तो दर्शने नित्यं स्मरेत् प्रातः समाहितः,
तथाप्युपासकः सर्वैरपराधैर्विमुच्यते ।७५।

❁परिशिष्ट विषय भी परमपूज्य श्री गुरुदेव (स्तोत्र रचियिता) द्वारा ही उपलब्ध हुआ है।

संख्या	द्वादश स्थान परिचयात्मक चक्र	
१	काञ्चीपुर में	कामाक्षी
२	मलयगिरि में	भ्रामरी (भ्रामराम्बा)
३	केरल (मालवार देश)	कुमारी (कन्याकुमारी)
४	आनर्त (गुजरात)	अम्बा
५	मालवा (उज्जैन)	कालिका
६	करबीर (कोल्हापुर)	महालक्ष्मी
७	प्रयाग (इलाहाबाद)	ललिता (अलोपी)
८	विन्ध्यगिरि (विन्ध्याचल)	विन्ध्यवासिनी
९	वाराणसी	विशालाक्षी
१०	गयातीर्थ	मङ्गलावती
११	बङ्गाल	सुन्दरी
१२	नैपाल	गुह्यकेश्वरी

५१ देबी पीठों का रहस्य

सती के देह त्याग के पश्चात् भगवान शंकर उस मृत शरीर को लिए हुए चारो ओर भ्रमण करते रहे, तब भगवान विष्णु ने अपने चक्र से उस

शरीर के खण्ड खण्ड करके सम्पूर्ण भारत में सती के देह खण्डों से विभिन्न पवित्र पीठ एवं उपपीठों की स्थापना की।

शक्ति के उपासकों की यह सुदृढ़ मान्यता है कि विष्णु के चक्र से कटे हुये भगवती सती के शरीर के अंग प्रत्यंग एवं आभूषण आदि जिन जिन स्थानों पर गिरे थे, उन उन स्थानों पर जगदम्बा व भगवान् शंकर समस्त लोक-कल्याणार्थ पाषाण रूप में वर्तमान हैं।

इस कथन में निम्नांकित श्लोक प्रमाणरूप में उद्धृत किये गये हैं यथा—

विष्णुचक्रेण सञ्छिन्नास्तद्देहावयवाः पृथक्,
निपेतुः पृथिवीपृष्ठे स्थाने स्थाने महामुने।१।

महातीर्थानि तान्येव मुक्तिक्षेत्राणि भूतले,
सिद्धपीठा हि ते देशा देवानामपि दुर्लभाः।२।

भूमौ सम्पतितास्तेतु, छायाङ्गावयवाः पृथक्,
जम्मुः पाषाणतां सर्वे, लोकानां हितहेतवे।३।

आरासनेऽर्बुदाङ्गे च क्षेत्रे जालन्धरे तथा,
क्रमशः पतितौतस्याः कुचौ तु वामदक्षिणौ।४।

संकेत—कल्पभेद से अथवा अंग प्रत्यंग तथा अभूषण व वस्त्र आदि के पतन क्रम से शक्ति पीठों में मतैक्य नहीं है, फिर भी निम्नांकित विवरण क्रम में अधिकतर शक्ति विद्वानों में विशेष मतभेद नहीं है, ५१ शक्ति पीठों का विवरण इस प्रकार आगे प्रस्तुत कर रहे हैं—

५१ शक्तिपीठों का परिचयात्मक चक्र

संख्या	स्थान	अंग प्रत्यंग, वस्त्र आभषण आदि	शक्ति—नाम	भैरव
१	हिंङ्गूला	ब्रह्मरन्ध्र	कोट्टवीशा	भीमलोचन भैरव
२	कबीर[शर्करा]	तीनचक्षु	महिषमर्दिनी	क्रोधीश भैरव
३	सुगन्धा	नासिका	सुनन्दा	त्र्यम्बक भैरव
४	काश्मीर	कण्ठभाग	महामाया	त्रिसन्ध्येश्वर भैरव
५	ज्वालामुखी	महाजिह्वा	सिद्धदा	उन्मत्त भैरव
६	जालन्धर	स्तन	त्रिपुर मालिनी	भीषण भैरव
७	वैद्यनाथ	हृदय	जयदुर्गा	वैद्यनाथ भैरव
८	नैपाल[नयपाल]	जङ्घा	महामाया	कपाली भैरव
९	मानस	दक्षिणहस्त	दाक्षायणी	अमर भैरव
१०	उत्कल[विरजाक्षेत्र	नाभिदेश	विमला	जगन्नाथ भैरव
११	गण्डकी	गण्डस्थल[कपोल]	गण्डकीदेवी	चक्रपाणि भैरव
१२	बहुला	बामबाहु	बहुलादेवी	भीरुक भैरव
१३	उज्जयिनी	कूर्पर [कोहनी]	मंगल चण्डिका	कपिलाम्बर भैरव
१४	त्रिपुरा	दक्षिणपाद	त्रिपुर सुन्दरी	त्रिपुरेश भैरव
१५	चहल	दक्षिणबाहु	भवानी देवी	चन्द्रशेखर भैरव
१६	विस्रोता	बामपाद	भ्रमरी देवी	भैरवेश्वरः भैरव

१६	विस्ताता	वामपाद	भ्रमरी देवी	भैरवेश्वर. भैरव

संख्या	स्थान	अंग प्रत्यंग, वस्त्र आभूषण आदि	शक्ति का नाम	भैरव
१७	कामगिरि (नीलगिरि)	योनिभाग	कामाख्या देवी	उमानन्द भैरव
१८	प्रयाग	हस्ताङ्गुलि	ललितादेवी	भव ,,
१९	जयन्ती	बाजङ्घा	जयन्त देवी	क्रमदीश्वर ,,
२०	युगाद्या	दक्षिणाङ्गुष्ठ	भूतधात्री देवी	क्षीरखण्डक ,,
२१	कालपीठ	दक्षिणपादाङ्गुलि	कालिका देवी	नकुलीश ,,
२२	किरीट	किरीट	विमला देवी	संवर्त ,,
२३	वाराणसी	कर्णकुण्डल	विशालाक्षी(मणिकर्णी	काल ,,
२४	कन्याश्रम	पृष्ठ	शर्वाणी	निमिष ,,
२५	कुरुक्षेत्र	गुल्फ	सावित्री	स्थाणु
२६	मणिबन्ध	मणिबन्ध(करिमणबन्ध)	गायत्री	सर्वानन्द भैरव
२७	श्री शैल	ग्रीवा	महालक्ष्मो	शम्बरानन्द ,,
२८	काञ्ची	अस्थि	देवगर्भा	रुर ,,
२९	काल माधव	नितम्बक अर्द्धभाग	देवी काली	असितांग ,,
३०	शोणदेश	नितम्ब का अर्द्धभाग	नर्मदा देवी	भद्रसेन
३१	रामगिरि	अन्यस्तन	शिवादेवी	चण्ड भैरव
३२	वृन्दावन	केशपाश	उमा देवी	भूतेश ,,
३३	शुचिदेव	ऊर्ध्वदन्त	नारायणी	संहार ,,

३४	पञ्चसागर	अधोदन्त	वाराही	महारुद्र भैरव
३५	करतोयातट	तल्प	अपर्णा	वामन ,,
३६	श्री पर्वत	गुल्फदक्षिण	श्री सुन्दरी	सुन्दरानन्द
३७	विभाषदेश	वाम गुल्फ	कपालिनी	सर्वानन्द ,,
३८	प्रभाषक्षेत्र	उदर	चन्द्रभागा	वक्रतुण्ड ,,
३९	भैरव पर्वत	ऊर्ध्व ओष्ठ	अवन्ती	लम्बकर्ण ,,
४०	जनस्थल	दोनो चिबुक	भ्रामरी	विकृताक्ष भैरव
४१	सर्वशैल	वामगण्ड	राकिनी	वत्सनाम
४२	गोदावरी	गण्ड	विश्वेशी	दण्डपाणि ,,
४३	रत्नावली	दक्षिणस्कन्ध	कुमारी	शिव
४४	मिथिला	वामस्कन्ध	उमा देवी	महोदर ,,
४५	नलहाटी	नला	कालिका देवी	योगेश भैरव
४६	कर्णाट (कर्णाटक)	कर्ण	जय दुर्गा	अभीरु भैरव
४७	वक्रेश्वर	मनःपात	महिषमर्दिनी	वक्रनाथ ,,
४८	यशोर	हस्तकमल	यशोरेश्वरी	चण्ड ,,
४९	अट्टहास	ओष्ठ	फुल्लरा	विश्वेश भैरव
५०	नन्दिपुर	कण्ठहार	नन्दिनी	नन्दकेश्वर
५१	लङ्का	नूपुर	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर
	विराट	पादाङ्गुलि	अम्बिका	अमृताख्य ,,
	मगध	दक्षिण जङ्घा	सर्वानन्दकरी	व्योमकेश भैरव

सङ्केत—अंतिम दो पीठों का उल्लेख बहुत से ग्रन्थों में नहीं है।

१०८ शक्तिपीठों का परिचय

श्री देवी भागवत में १०८ शक्ति पीठों का वर्णन किया गया है, वहां केवल स्थान तथा देवता का ही विवेचन प्राप्त होता है। शक्ति के उपासकों के लिए यह विवरण अत्यन्त उपयोगी है। भारतवर्ष का प्रत्येक भाग शक्ति के निवास स्थान के रूप में कितना पवित्र हैं ? इसका ज्ञान निम्न परिचयात्मक रीति से चलता है—

अष्टोत्तरशत शक्तिपीठ परिचयात्मक चक्र—

संख्या	स्थान		देवता (शक्ति)
१	वाराणसी	—	विशालाक्षी
२	नैमिषारण्य	—	लिंगधारिणी
३	प्रयाग	—	ललिता
४	गन्धमादन	—	कामुकी
५	दक्षिणमानस	—	कुमुदा
६	उत्तर मानस	—	विश्वकामा
७	गोमन्त	—	गोमती
८	मन्दर	—	कामचारिणी
९	चैत्ररथ	—	मदोत्कटा
१०	हस्तिनापुर	—	जयन्ती
११	कान्यकुब्ज	—	गौरी
१२	मलय	—	रम्भा
१३	एकाम्र	—	कीर्तिमती
१४	विश्व	—	विश्वेश्वरी

संख्या	स्थान		देवता (शक्ति)
१५	पुष्कर	—	पुरुहूता
१६	केदार	—	सन्मार्गदायिनी
१७	हिमपृष्ठ	—	मन्दा
१८	गोकर्ण	—	भद्रकर्णिका
१९	स्थानेश्वर	—	भवानी
२०	विल्वक	—	विल्वपत्रिका
२१	श्री शैल	—	माधवी
२२	भद्रेश्वर	—	भद्रा
२३	वाराहशैल	—	जया
२४	कमलालय	—	कमला
२५	रुद्रकोटि	—	रुद्राणी
२६	कालिञ्जर	—	काली
२७	शालग्राम	—	महादेवी
२८	शिवलिंग	—	जलप्रिया
२९	महालिंग	—	कपिला
३०	माकोट	—	मुकुटेश्वरी
३१	मायापुरी	—	कुमारी
३२	सन्तान	—	ललिताम्बिका
३३	गया	—	मंगला
३४	पुरुषोत्तमक्षेत्र	—	विमला
३५	सहस्राक्ष	—	उत्पलाक्षी
३६	हिरण्याक्ष	—	महोत्पला
३७	विपाशा	—	अमोघाक्षी
३८	पुण्ड्रवर्धन	—	पाटला

संख्या	स्थान		देवता (शक्ति)
३९	सुपार्श्व	—	नारायणी
४०	त्रिकटु	—	रुद्रसुन्दरी
४१	विपुल	—	विपुला
४२	मलयाचल	—	कल्याणी
४३	सह्याद्रि	—	एकवीरा
४४	हरिश्चन्द्र	—	चन्द्रिका
४५	रामतीर्थ-रमणी	—	रमणी
४६	यमुना	—	मृगावती
४७	कोटितीर्थ	—	कोटवी
४८	मधुवन	—	सुगन्धा
४९	गोदावरी	—	त्रिसध्या
५०	गंगाद्वार	—	रतिप्रिया
५१	शिवकुण्ड	—	शुभानन्दा
५२	देविकातट	—	नन्दिनी
५३	द्वारावती	—	रुक्मिणी
५४	वृन्दावन	—	राधा
५५	मथुरा	—	देवकी
५६	पाताल	—	परमेश्वरी
५७	चित्रकूट	—	सीता
५८	विन्ध्यगिरि	—	विन्ध्यवासिनी
५९	करवीर	—	महालक्ष्मी
६०	विनायक	—	उमादेवी
६१	वैद्यनाथ	—	आरोग्या
६२	महाकाल	—	महेश्वरी

संख्या	स्थान		देवता (शक्ति)
६३	उष्णतीर्थ	—	अभया
६४	विन्ध्यपर्वत	—	नितम्बा
६५	माण्डव्य (मंडफा)	—	माण्डवी
६६	माहेश्वरीपुर	—	स्वाहा
६७	छगलण्ड	—	प्रचण्डा
६८	अमरकण्टक	—	चण्डिका
६९	सोमेश्वर	—	वरारोहा
७०	प्रभास	—	पुष्करावती
७१	सरस्वती	—	देवमाता
७२	तट	—	पारावार
७३	महालय	—	महाभागा
७४	पयोष्णी	—	पिंगलेश्वरी
७५	कृतशौच	—	सिंहिका
७६	कार्तिक	—	अतिशांकरी
७७	उत्पलावर्तक	—	लीला (लोला)
७८	शोणसंगम	—	सुमद्रा
७९	सिद्धवन	—	लक्ष्मी
८०	भरताश्रम	—	अनंगा
८१	जालन्धर	—	विश्वमुखी
८२	किष्किन्धा (पर्वत)	—	तारा
८३	देवदारुवन	—	पुष्टि
८४	काश्मीर मण्डल	—	मेधा
८५	हिमाद्रि	—	मीमादेवी
८६	विश्वेश्वर	—	तुष्टि